P.G. IIIrd Semester 18-20

Page No-1

Dr Kumari Manju H.O.D. Economics.

Ques: What are the different methods by which a Government can liquidate the public debt? Which of this methods is the best?
(सार्वजनिक ऋण के भुगतान के विभिन्न तरीके)

Ans: सार्वजनिक ऋण भार स्वरूप होता है अतः व्यक्ति की ही तरह सरकार को भी भविष्य के भार को कम करने तथा अपनी साख को बनाए रखने के लिए अधिकतम शीघ्र ब्याज सहित ऋण के सम्पूर्ण दायित्व का भुगतान कर देना चाहिए।

सार्वजनिक ऋण के भुगतान के तरीके ऋण के प्रकृति पर निर्भर करती है। सार्वजनिक ऋण आंतरिक या बाह्य हो सकते हैं। -

(1) ऋण निषेध - सरकार ऋण लौटा देने से इनकार कर दे सकती है किन्तु इससे जनता के बीच सरकार के भविष्य की साख खत्म हो जायगी साथ ही इससे राजनीतिक एवं सामाजिक असंतोष का जन्म होगा जो सरकार के अस्तित्व के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा आंशिक ऋण निषेध के लिए परिपक्वता अवधि को बढ़ा देने, ब्याज दर को कम कर देने, मुद्रा प्रसार लागू मुद्रा मूल्य को कम कर देने आदि तरीके को अपनाए जा सकते हैं।

निषेध एक सरल किन्तु खतरनाक तरीका है वस्तुतः यह ऋण भुगतान का नहीं अपितु ऋण नहीं चुकाने का तरीका है।

(2) ऋण परिवर्तन : सरकार ऋण भुगतान के बदले सूद की निम्न दर शोध्यता की लम्बी अवधि आदि लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से पुराने ऋण को नए ऋण में बदल सकती है यह तरीका ऋण भुगतान की असमर्थता की अवस्था में भी अपनाया जाता है।

(3) ऋण पुनः शोधन : इस तरीके के अन्तर्गत सरकार नए ऋण पत्रों को जारी करके पुराने ऋणों का भुगतान करती है इसे भी सरकार असमर्थता की स्थिति में अपनाती है। ऋण परिवर्तन तथा ऋण पुनः शोधन से सरकार को भुगतान की तत्कालिक चिन्ता से मुक्ति मिल जाती है किन्तु भविष्य में भार बढ़ जाता है इसलिए डाल्टन और पिगू जैसे वित्तशास्त्रियों ने इसे अच्छा तरीका नहीं माना है।

(4) वार्षिक वृत्ति : जब सरकार ऋण का भुगतान किस्तों के रूप में प्रतिवर्ष करती है तो उसे वार्षिक वृत्ति कहते हैं। इसमें वार्षिक वृत्ति की राशि समान रहती है तथा इसमें ब्याज तथा मूल धन दोनों शामिल रहते हैं। यह तब अपनाया जाता है जब सार्वजनिक बजट की अपेक्षा सार्वजनिक आय इतनी अधिक न हो कि सम्पूर्ण राशि को एक ही बार लौटा दिया जाय। सरकारी प्रतिभूतियों के मूल्यों में ह्रास की अवस्था में भी साख बचाने के लिए सरकार इसे अपना सकती है। इसका गुण यह है कि ऋण धीरे-धीरे खत्म हो जाता है जबकि किसी एक समय में सरकार को अधिक भार नहीं वहन करना पड़ता है।

(5) परिशोधन कोष : इसके लिए ऋण भुगतान के लिए एक विशेष कोष का निर्माण किया जाता है। प्रारम्भ में Cumulative Sinking fund हुआ करता था जिसे सर्वप्रथम रिचर्ड प्राइस की सलाह पर William Pitt ने इंग्लैंड में अपनाया था किन्तु आज Non Cumulative Sinking fund हुआ करता है। प्रत्येक वर्ष कुछ राशि अलग करके परिशोधन कोष में रख दी जाती है और उसी वर्ष ऋण के

Scanned with CamScanner

एक अंश का भुगतान कर दिया जाता है और यह राशि प्रायः पूर्व निश्चित रहती है और अवधि पूरा होने के साथ ऋण का भुगतान पूरा हो जाता है। ऋण भुगतान के लिए परिशोधन कोष का निर्माण एक प्रकार से बीमा का आश्वासन है- जिससे ऋणदाता आश्वस्त हो जाता है। इससे सरकार का क्रेडिट एक समय में अत्यधिक भार भी नहीं पड़ता है और ऋण का भुगतान भी हो जाता है। ऋणदाताओं के बीच सरकार की साख भी बनी जाती है।

(6) क्रमानुसार भुगतान: सरकार ऐसी व्यवस्था करती है कि चालू किए गए ऋण पत्रों में कुछ की परिपक्वता अवधि प्रतिवर्ष पूरी हो जाए और सरकार उसे लौटा दे। ऐसे ऋण पत्रों की संख्याक्रम के अनुसार आरम्भ में ही निश्चित कर दी जाती है। अमेरिका में स्थानीय सरकारों द्वारा इस विधि का अधिक उपयोग किया गया है।

(7) लॉटरी द्वारा भुगतान: यह क्रमानुसार भुगतान का ही संशोधित रूप है। इसके अन्तर्गत किन ऋण पत्रों का प्रतिवर्ष भुगतान किया जाता है उनका क्रम पहले से निश्चित नहीं होता बल्कि लॉटरी द्वारा निश्चित किया जाता है किन्तु इसकी सबसे त्रुटि यह है कि ऋणदाता को मालूम नहीं रहता कि उसको कब भुगतान मिलेगा? संभव है कि वह जब चाहे तब भुगतान न हो और जब न चाहे भुगतान हो जाय।

(8) पूँजी कर: सरकार ऋण भुगतान के लिए विशेष प्रगतिशील पूँजी कर आरोपित कर सकती है। सरकार एक निश्चित कर रहित सीमा निर्धारित करके उससे ऊपर की सम्पत्ति पर प्रगतिशील ढंग से पूँजी कर लगाती है जिससे प्राप्त आय से ऋण का भुगतान कर दिया जाता है। इस प्रणाली को प्राचीन अर्थशास्त्री रिकार्डो ने भी समर्थित किया था साथ ही डाल्टन तथा पीगू जैसे आधुनिक विचारकों ने इसका समर्थन किया। Dr Dalton के शब्दों में- "My own opinion ~~throughout~~ throughout the controversy has been, still is in favour of the levy as the best policy, on merits for dealing with the debt." इससे सरकार को ऋण के भार से शीघ्र और सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है जिससे कुल भार घट जाता है। विशेषकर युद्ध ऋण के भुगतान में यह सर्वोत्तम साबित होता है- क्योंकि युद्धोत्तर काल की पूँजी के पूर्व ऋण भुगतान का यह एक मात्र तरीका साबित होता है। किन्तु इससे व्यक्तियों के कार्य तथा बचत की इच्छा एवं शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ने की आशंका बनी रहती है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि परिशोधन कोष एवं पूँजी कर अपेक्षाकृत अच्छे तरीके हैं। अनुत्पादक ऋण लौटाने के लिए परिशोधन कोष तथा अनुत्पादक ऋण को लौटाने के लिए पूँजी कर उत्तम है। प्रत्येक साल ऋण के एक भाग का भुगतान कर देना चाहिए अन्यथा भुगतान कठिन हो जायगा भार बढ़ जायगा और सरकार की साख के प्रति लोग शंकालु हो जायेंगे। वस्तुतः किसी एक तरीके को अपनाने की अपेक्षा कई तरीकों का एक साथ अपनाना श्रेयस्कर होगा। बाह्य ऋण के लिए ऋण-निषेध, ऋण पुनः शोधन, परिवर्तन आदि के तरीके अपनाये जा सकते हैं किन्तु ये सारे तरीके संतोषप्रद साबित नहीं होते।

बाह्य ऋण के भुगतान के लिए Export Surplus आवश्यक है क्योंकि विदेशियों को विदेशी मुद्रा अपनी वस्तुओं और सेवाओं के रूप में लौटाया जा सकता है। अतः विदेशी ऋण का उत्पादक कार्यों में ही विनियोग किया जाना चाहिए। विशेषकर निर्यात वस्तुओं का बढ़ना चाहिए। Export Surplus के निर्यात प्रोत्साहन आयात प्रतिस्थापन का विकास आयात नियंत्रण आदि नीति को अपनाया जा सकता है। अतः विदेशी ऋण का भुगतान विदेशी विनिमय के अर्जन द्वारा ही किया जा सकता है जिसके लिए निर्यात बचत जरूरी है।

Scanned with CamScanner